

## पाश की कविता

# हम लड़ेंगे साथी

हम लड़ेंगे साथी

हम लड़ेंगे साथी, उदास मौसम के लिए  
हम लड़ेंगे साथी, गुलाम इच्छाओं के लिए  
हम चुनेंगे साथी, जिंदगी के टुकड़े

हथौड़ा अब भी चलता है, उदास निहाई पर  
हल की लीकें अब भी बनती हैं, चीखती धरती पर  
यह काम हमारा नहीं बनता, सवाल नाचता है  
सवाल के कंधों पर चढ़कर  
हम लड़ेंगे साथी

कत्ल हुए जज्वात की कसम खाकर  
बुझी हुई नज़रों की कसम खाकर  
हाथों पर पड़ी गांठों की कसम खाकर  
हम लड़ेंगे साथी

हम लड़ेंगे तब तक  
कि वीरू बकरिहा जब तक  
बकरियों का पेशाब पीता है  
खिले हुए सरसों के फूलों को  
बीजनेवाले जब तक खुद नहीं सूंघते  
कि सूजी आंखों वाली  
गांव की अध्यापिका का पति जब तक  
जंग से लौट नहीं आता  
जब तक पुलिस के सिपाही  
अपने ही भाइयों का गला दवाने के लिए विवश हैं  
कि बाबू दफ्तरों के  
जब तक रक्त से अक्षर लिखते हैं...  
हम लड़ेंगे जब तक  
दुनिया में लड़ने की जरूरत बाकी है...

जब बंदूक न हुई, तब तलवार होगी  
जब तलवार न हुई, लड़ने की लगन होगी  
लड़ने का ढंग न हुआ, लड़ने की जरूरत होगी  
और हम लड़ेंगे साथी...

हम लड़ेंगे  
कि लड़ने के बगैर कुछ नहीं मिलता  
हम लड़ेंगे  
कि अभी तक लड़े क्यों नहीं  
हम लड़ेंगे  
अपनी सजा कबूलने के लिए  
लड़ते हुए मर जाने वालों  
की याद जिंदा रखने के लिए  
हम लड़ेंगे साथी...

## पाठक मंच

मजदूर मोर्चा का नया अंक मिला। इस अंक में महिला आरक्षण पर अच्छी सामग्री आप ने प्रकाशित की है। क्या विडंबना है कि सुप्रीम कोर्ट की अपील भी सुप्रीम कोर्ट में की जा रही है। न्यायपालिका का इससे बड़ा मजाक और क्या बन सकता है। धर्म के नाम पर लूटने-खाने वाले बाबाओं की पोल खोल कर आपने बहुत ही अच्छा किया है। आज मीडिया ऐसे बाबाओं को बढ़ावा दे रहा है। अंक में प्रकाशित अन्य लेख एवं समाचार भी अच्छे लगे।

- हरेराम, फरीदाबाद

मजदूर मोर्चा का अंक मिला। पहले की भांति यह अंक भी बहुत अच्छा है। सुप्रीम कोर्ट की अपील भी सुप्रीम कोर्ट में लिख कर आपने न्यायपालिका की असलियत को उजागर किया है। अफगानिस्तान में हारता अमेरिका लेख भी प्रासंगिक है। कविता

भी अच्छा लगा। महिला आरक्षण पर भी संतुलित विचार प्रकट किया गया है। कविता भी काफी अच्छी लगी। आप चुनी हुई श्रेष्ठ कविताओं का प्रकाशन करते हैं जबकि आज कविता के नाम पर ज्यादा रद्दी चीजें ही सामने आ रही हैं।

- विजय प्रकाश, गुड़गांव

मजदूर मोर्चा का नया अंक पढ़ने को मिला। मैंने पहली बार इस अखबार को पढ़ा।

इसे पढ़ने के बाद ऐसा लगा कि यह सच्ची और जागरूकता फैलाने वाली पत्रकारिता का नमूना है जिसका आज समाज में सिरे से अभाव हो गया है। इस अखबार में प्रकाशित सभी रचनायें अच्छी लगी। बाबाओं के पाखंड पर आपने जो लेख छपा है, वह बहुत ही अच्छा है। इसी प्रकार अफगानिस्तान में हारता अमेरिका लेख भी प्रासंगिक है। कविता

भी काफी अच्छी लगी। अब मैं नियमित रूप से मजदूर मोर्चा पढ़ा करूंगा।

- पंकज कुमार, पलवल

मजदूर मोर्चा का नया अंक मिला। पहले की भांति ही सामग्री विचारोत्तेजक और प्रासंगिक है। पहले से लगातार यह अखबार धारदार होता चला जा रहा है। आज के दौर में जब पत्रकारिता के क्षेत्र में व्यावसायिकता हावी है, इस अखबार का प्रकाशन कर आप एक मिसाल कायम कर रहे हैं।

अंक में प्रकाशित सभी सामग्री, विशेषकर न्यायपालिका पर लिखा गया समाचार और पाखंडी बाबुओं पर प्रकाशित लेख बहुत ही अच्छा लगा। महिला आरक्षण पर भी संतुलित विचार प्रकट किये गये हैं। आशा है, मजदूर मोर्चा लगातार पाठकों को बेहतर सामग्री प्रदान करता रहेगा।

- मुरली मनोहर मिश्र, गुड़गांव

## पेज 1 का शेष भाग

जज निर्मल यादव केस दोबारा चालू विधि विशेषज्ञों के अनुसार सीबीआई को कार्मिक मंत्रालय के माध्यम से राष्ट्रपति की स्वीकृति लेनी चाहिए थी, वह भी केवल जज निर्मल यादव के लिए न कि कानून मंत्रालय से। राष्ट्रपति इस मसमले में सीजेआई से सलाह ले कर कोई फैसला करती। लेकिन यहां तो सब उलटा-पुलटा हुआ पड़ा है। अब देखना है कि दोबारा की तपतीश का क्या परिणाम निकलता है। जानकारों का मानना है कि आगामी मई माह में सीजेआई सेवा-मुक्त हो जायेंगे और नया सीजेआई निर्मल यादव को कोई राहत देने वाला दिखता नहीं।

इस सारे मामले में मजदूर बात यह सामने आई कि न तो के जी बालाकृष्णन और न ही मोइली इस कलंक को माथे पर लगाना चाहते हैं। दोनों एक-दूसरे की ओर केस को धकेल कर अपनी जान छुड़ाने के चक्कर में हैं। लेकिन बात की तह तक जाने वाले इन्हें छोड़ने को तैयार नहीं। इसलिए आरटीआई एक्ट के तहत दोनों ही महानुभावों से इस बाबत जानकारी मांगी गई है और दोनों ने ही एक्ट की गोपनीयता वाली धारा की आड़ लेकर बचने का प्रयास किया है। लेकिन जब मामला मुख्य सूचना आयुक्त तक पहुंचेगा तो दोनों ही नंगे हो जायेंगे।

वास्तव में बात भारत के मुख्य न्यायाधीश अथवा कानून मंत्री की नहीं है बल्कि पूरे शासक वर्ग की है, जिसमें बड़े न्यायाधीश भी शामिल हैं। इसमें निर्मल यादव जज हैं तो इनके भाई हरियाणा सरकार में मंत्री। सत्ता के भीतर का यह गठजोड़ हमेशा एक दूसरे को बचाने व समृद्ध करने में जी जान से लगा रहता है।

पुलिस की वर्दी में डकैतों का पकड़ा जाना

ट्रेनिंग के बाद डीएसपी का पद जबकि काबिलियत सिपाही की भी नहीं और उसके ऊपर राजनीतिक संरक्षण यानी कि एक तो करेला उस पर नीम चढ़ा, बस फिर क्या था, इसने एक के बाद एक कारनामे कर दिखाये जिनके आधार पर इसे न केवल नौकरी से निकाल देना चाहिए था, बल्कि जेल में होना चाहिए था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ जिसकी परिणति पानीपत कांड के रूप में हुई।

पुलिस महकमे में यह अपने किस्म का अकेला मामला नहीं है। राजनैतिक दखलंदाजी ने लगभग सारी पुलिस का बेड़ा गर्क कर छोड़ा है। राजनेताओं को ऐसे ही पुलिसकर्मी रास आते हैं जो उनके इशारे पर कुछ भी उलटा-सीधा कर दें, संविधान एवं जनता के प्रति वफादार होने की बजाये वे राजनेताओं के प्रति वफादार हों। आज एक अशोक श्योरान तो पकड़ा गया, सैंकड़ों ऐसे अशोक श्योरान अब भी भरे पड़े हैं जो रोजाना कहीं न कहीं पानीपत कांड

दोहराते रहते हैं। दरअसल, इस श्योरान के पकड़े जाने की एक खास वजह, जानकारों के मुताबिक यह थी कि इसने अति उत्साह में कुछ दिन पहले पानीपत के उन तेल काला बाजारियों को पकड़ा था जो एक राजनेता कादियान के लिए काम करते थे और जिला पुलिस को भी अच्छी-खासी मंथली देते थे। अब भला जिले का पुलिस अधीक्षक यह कैसे पचा सकता था कि उसके इलाके में कोई दूसरा आ कर पकड़-धकड़ व लूटमार करे, लिहाजा जिला पुलिस ने भी अशोक को सबक सिखाने की ठान ली, और भली-भांति ऐसा सबक सिखा भी दिया जो वह ताजिंदगी याद रखेगा।

यदि अशोक ने जिला पुलिस से बैर ना लिया होता तो कुछ भी बात न थी। ना तो कैमरे कुछ बोलते और ना ही लूटने-पिटने वाले व्यापारी जबान खोलने की हिम्मत जुटा पाते। रिपोर्टों से स्पष्ट है कि फ़िरौती अथवा रंगदारी मांगे जाने के बाद व्यापारी ने स्थानीय पुलिस को अवगत कराया कि उनके होते हुए यह दूसरा डाकू गिरोह कहाँ से आ गया? ऐसे में यदि स्थानीय पुलिस से अशोक का तालमेल ठीक होता तो मामले को वहीं रफ़ा-दफ़ा कर दिया जाता।

ऐसा भी नहीं है एक डीएसपी अशोक श्योरान के इस तरह पकड़े जाने के बाद महकमे के अन्य लुटेरों की लूट-खसोट पर अब कोई रोक लग गई हो, सभी लुटेरे ज्यों के त्यों लूट में व्यस्त हैं। पूरे महकमे में बमुश्किल दस से बीस प्रतिशत लोग ही ऐसे होंगे जो लूट-खसोट से परहेज रखते हुए ईमानदारी से अपना कर्तव्य पालन

करते हों। लेकिन ऐसे लोग न तो लुटेरे उच्चाधिकारियों को पसंद आते हैं और न ही भ्रष्ट राजनेताओं को, लिहाजा ऐसे लोगों को उन तैनातियों से दूर ही रखा जाता है जहाँ से जनता को लूटा जाता है। आज हालत यह हो चुकी है कि जिलों में लगे पुलिस अधीक्षकों व रेंजों में लगे महानिरीक्षकों में कोई-कोई विरला ही नज़र आता है जो खुद ईमानदार हो और अपने मातहतों को ईमानदारी से काम करने को प्रेरित करता हो। हालात अब चौकी और थानों को बेचने से भी आगे निकल चुके हैं। मुलाजमान बताते हैं कि बाजे-बाजे एसपी तो थानेदारों का वेतन तक ही हड़प लेते हैं। ऐसे-ऐसे एसपी भी जिलों में तैनात हैं जिनके सामने जाने से पहले थानेदार अपनी जेब की नकदी बाहर किसी को दे जाते हैं, क्योंकि उन्हें पता है कि उस एसपी ने जेब तलाशी में जो मिलेगा, उसे भी हड़प लेना है।

तथाकथित लोकतांत्रिक भारत के राजनीतिज्ञों द्वारा बना दी गयी इन परिस्थितियों में न केवल पुलिस महकमे में, बल्कि हर महकमे में सारे अशोक श्योरान जैसे ही भरे पड़े हैं। यदि हर रोज भी ऐसे श्योरानों को पकड़ा जाये तो भी ये समाप्त नहीं हो सकें, क्योंकि इनकी जगह जिनको लाया जा रहा है वे भी तो ऐसे ही हैं। इस स्थिति से छुटकारा तो केवल तभी मिल सकता है जब ईमानदारी एवं योग्यता के आधार पर भर्तियाँ एवं नियुक्तियाँ हों तथा इसके बावजूद कोई अपराधी तत्व तैनाती पा जाये तो उसके विरुद्ध कड़ी से कड़ी कार्यवाही की जाये। लेकिन यह सब इन राजनेताओं को रास आने वाला नहीं है।

# मजदूर मोर्चा

पाक्षिक समाचार पत्र

फरीदाबाद के पाठकों के लिए मजदूर मोर्चा अब हॉकरों के माध्यम से उपलब्ध है। जो भी हॉकर आपके यहां अखबार देने आता है, वह मांगने पर मजदूर मोर्चा अवश्य देगा। डाक से अखबार पहुंचे या नहीं, इसका कोई ठिकाना न होने के कारण हमने यह नई व्यवस्था की है। अखबार मिलने में किसी तरह की समस्या होने पर हमारे प्रसार प्रबंधक से निम्न मोबाइल नंबर पर संपर्क करें :

दीक्षित न्यूज एजेंसी

9811159238

अब बल्लभगढ़ व पलवल के पाठक भी अपने हॉकर से मजदूर मोर्चा प्राप्त कर सकते हैं। किसी कठिनाई की स्थिति में संपर्क करें :

भूटानी न्यूज एजेंसी

मीनार गेट, पलवल। मोब.: 09354112741,  
09728382049